Ques: Explain the medias of Public Opinion (Notes)

Ans: प्रजातंत्र में जनमत का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है। छोटे समूहों में तो जनमत निर्माण एक सरल प्रक्रिया है, लेकिन बड़े समूहों में जनमत निर्माण की प्रक्रिया बहुत ही जटिल होती है। छोटे समूहों में लोग एक जगह इकट्ठा होते हैं, कोई जानकार किसी विषय या घटना के बारे में लोगों को अवगत कराता है। फिर दो-चार प्रतिष्ठित लोग समस्या के महत्व पर अपना विचार देते हैं, कुछ व्यक्ति समाधान के एक-दो विकल्प रखते हैं और अन्त में लोग हाथ उठाकर यह मालूम कर लेते हैं कि अधिक लोग किस मत में हैं। लेकिन बड़े समूहों में सभी व्यक्तियों को एक जगह इकट्ठा करना कठिन है। इसमें लोग इतनी बड़ी संख्या में और इतना अधिक फैले होते हैं कि विचारदाता, विचार प्रचारक और आम जनता के बीच सीधा सम्पर्क कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में अनेक प्रकार के माध्यमों की सहायता से ही इन तीनों के बीच सम्बन्ध जोड़ा जाता है जिससे कि जनमत का निर्माण हो सके।

KIMBALL YOUNG ने जन समाज में जन संचार (Mass Communication) के विभिन्न साधनों को ही जनमत के निर्माण का साधन माना है। उन्होंने अपनी पुस्तक में रेडियो, समाचार-पत्र-पत्रिकायें, टेलिविजन और सिनेमा को ही जनसंचार का साधन माना है। उनके अनुसार, इन्हीं साधनों से नेता अपने भाषण द्वारा जनता के मतों को प्रभावित करते हैं, विशेषज्ञ अपने विचार प्रस्तुत करते हैं, राजनीतिक दल अपने किसी विश्वास के पक्ष में अभियान चलाते हैं, आदि। संक्षेप में कुछ प्रमुख जनमत निर्माण के साधन निम्नलिखित हैं —

(1) Newspaper and Magazine: जब समाज छोटा था तब केवल मुँह से बोले शब्दों द्वारा ही जनमत का निर्माण होता था लेकिन जैसे-जैसे समाज फैलता गया, आमने-सामने के सम्पर्क घटते गये, वैसे-वैसे ऐसे साधनों की आवश्यकता महसूस की जाने लगी जो बिना सीधा सम्पर्क के दूसरों के विचारों और विश्वासों को प्रभावित कर सकें। ऐसे साधन के रूप में सर्वप्रथम Newspaper और Magazines का विकास हुआ। ईसा से 60 वर्ष पहले Julius Ceasar दैनिक घटनाओं की लिखित सूचनायें रोम के

Scanned with CamScanner

चौराहे पर टंगवाने की व्यवस्था की थी। यही अखबार का पहला रूप था, जिससे जनमत निर्माण होता था। लेकिन आज अखबारों में विशेषज्ञों के विचार छपते हैं, महत्वपूर्ण विषयों पर editorial छपते हैं और महत्वपूर्ण विषय प्रथम पृष्ठ पर मोटे अक्षरों में छपे होते हैं जिसे पढ़कर आम जनता जनमत बनाती है।

कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि पूंजीपति वर्ग या शासक वर्ग कुछ समाचार पत्रों को अपने कब्जे में कर लेते हैं। यह प्रजातंत्र के लिए खतरनाक है। कुछ समाचार-पत्र तटस्थ होते हैं तो कुछ केवल अपना मत दूसरों पर थोपने का प्रयास करते हैं लेकिन स्वतंत्र विचार वाले अखबार पक्ष और विपक्ष की सच्ची बातों को ही जनता के सामने रखते हैं।

(2) Radio : रेडियो भी जनमत निर्माण की एक महत्वपूर्ण साधन है। समाचार पत्रों में हम घटनाओं का विवरण अपनी आँखों से पढ़ते हैं जबकि रेडियो में उन घटनाओं का विवरण अपनी कानों से सुनते हैं। विशेषज्ञों, नेताओं आदि के भाषण हम सीधे उन्हीं के जुबान में सुन लेते हैं जिनका प्रभाव जनमत निर्माण पर पड़ता है। समाचार पत्र तो केवल शिक्षित लोग ही पढ़ते और समझते हैं जबकि रेडियो की बातें अशिक्षित लोग भी सुनते और समझते हैं। समाचार पत्र की तुलना में रेडियो के समाचार को लोग अधिक विश्वसनीय मानते हैं। अतः स्पष्ट है कि समाचार पत्रों की तुलना में रेडियो जनमत निर्माण का अधिक प्रभावशाली साधन है। शायद यही कारण है कि दो देशों के युद्धों में जीतने वाला देश हारे हुए देश के रेडियो पर पहले अधिकार कर लेता है और उससे सूचनायें देकर जनता को शांत कर देता है। चुनाव के समय विरोधी दल भी रेडियो पर पहले अधिकार जमाना चाहते हैं ताकि उस पर प्रसारण कर वे जनता के मत को अपने पक्ष में कर लें।

(3) Television : जनमत निर्माण में टेलिविजन का प्रयोग यद्यपि कुछ ही वर्षों से प्रारंभ हुआ है। फिर भी यह अत्यधिक प्रभावशाली साबित हुआ है। उसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसके घटनाओं को हम देख भी लेते हैं और सुन भी लेते हैं। घटनायें दर्शकों के सामने सीधे प्रस्तुत कर दी जाती हैं जिससे

हजारों मील दूर की घटना को हम अपनी आँखों से देखते और उसके सम्बन्ध में विचार निश्चित करते हैं। टेलिविजन द्वारा भी भाषण, विशेषज्ञों के विचार, प्रचार आदि प्रस्तुत किये जाते हैं। कुछ वर्ष पूर्व भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व० श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में की गयी सैनिक कार्यवाहियों के सम्बन्ध में अनेक प्रकार के अफवाह उड़ाये गये थे। लेकिन टेलिविजन द्वारा जब वहाँ का सारा दृश्य संसार को दिखाया गया तो सैनिक कार्यवाही के पक्ष में जनमत स्थापित हो गया।

(4) Cinema : सिनेमा द्वारा भी जनमत निर्माण में सहायता अवश्य मिलती है। बहुत सारे सिनेमा प्रचार के दृष्टिकोण से बनाये ही जाते हैं। परिवार नियोजन के लाभ, दहेज-प्रथा के दोष आदि सामाजिक समस्याओं पर अनेक फिल्में बनी हैं जो जनमत को मोड़ने में बहुत सफल हुई हैं। लेकिन चूँकि सभी लोग सिनेमा को नहीं देख पाते, इसलिए इसका प्रभाव सीमित पड़ता है।

(5) Public Speaches : सार्वजनिक भाषणों के द्वारा सार्वजनिक हित के प्रश्न जनता के सामने उठाये जाते हैं और वाद-विवाद के माध्यम से उनपर प्रकाश डाला जाता है। जनता की असुविधाओं का वर्णन किया जाता है और सरकार द्वारा उन समस्याओं को दूर करने के लिए उठाये गये कदमों की सराहना या विरोध किया जाता है। भाषण देने वाला अपने व्यक्तित्व और भाषण के प्रभाव से जनता में एक ऐसी मजबूत भावना जगा देता है जो जनमत का एक महत्वपूर्ण अंग बन जाता है। अभी-अभी हाल के चुनाव में प्रधानमंत्री श्री वी० पी० सिंह ने Public Speaches के द्वारा ही जनता दल के प्रति जनमत का निर्माण किया।

(6) Political Parties : राजनीतिक दल दो प्रकार के होते हैं— एक सत्ता दल और दूसरा विरोधी दल। जहाँ सत्ता पक्ष जनता को अपने द्वारा किये गये कार्यों के आधार पर अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है, वहाँ विरोधी दल सरकार की गलतियों को बताकर अपने पक्ष में जनमत बनाना चाहता है। वे अपनी नीतियों और योजनाओं के समर्थन में प्रचार करते हैं और जनमत बनाते हैं। उनके द्वारा किये गये प्रचार जनता के सामान्य ज्ञान में वृद्धि करते हैं और समाज के स्तर को ऊँचा उठाते हैं।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार जहाँ एक ओर राजनीतिक दल जनमत को गढ़ते हैं तो दूसरी ओर उत्तेजना के क्षणिक लहरों द्वारा उत्पन्न दबाव को भी रोकते हैं। LOWELL के शब्दों में — "If political parties always distort public opinion in some degree, they also prevent the still larger distortion caused by sudden ways of excitement."

(7) Educational Institutions : शिक्षण संस्थाओं द्वारा प्रचारित विचारों का छात्रों के चरित्र और सामाजिक जीवन पर अधिक प्रभाव पड़ता है। यह संस्थायें छात्रों में नागरिक चेतना जागृत करती है। जिससे कि वे अन्य लोगों के मत को स्वीकार न करके अपनी बुद्धि और विवेक के आधार पर मत बनायें। यदि शिक्षक किसी नेता, राजनीतिक दल या समस्याओं के बारे में पक्ष विपक्ष की बातों को रखकर अपना निर्णय देते हैं तो छात्रों पर उसका उपयुक्त असर पड़ता है।

(8) Religious Institutions : धार्मिक संस्थानों में जहाँ एक जगह एक धर्म को मानने वाले जमा होते हैं और अनेक मस्तिष्क मिलते तथा टकराते हैं, वहाँ अंतः क्रिया होती रहती है। जिसके फलस्वरूप नये-नये विचारों का जन्म होता है। धार्मिक संस्थानों में साधु-संत या महात्मा यदि किसी विषय पर अपनी स्पष्ट राय देते हैं तो जनमत भी उसी प्रकार बनता है। यही कारण है कि जनता भी किसी विशेष समस्या पर अपने धार्मिक नेता के आदेश का इन्तजार करते रहते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जनमत निर्माण के अनेक साधन हैं। भारत जैसे गरीब देश में रेडियो और टेलिविजन सभी लोगों को उपलब्ध नहीं है। इसलिए एक प्रभावकारी साधन होते हुए भी यह कुछ ही लोगों तक सीमित है। भारत गाँवों का देश है और यहाँ की अधिकतर जनता को समाचार पत्र पढ़ने को नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में सिनेमा और सार्वजनिक भाषण ही जनमत निर्माण के साधन के रूप में भारत में अत्यधिक महत्वपूर्ण है।